शब्द-ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

संघर्ष-रहित पद्धति और विचार-निष्ठा

विनोबा

विचार-प्रचार की जो पद्धति शंकराचार्य ने रखी वह सबके लिए अनुकरणीय है। उनकी इस पद्धति के कारण हिन्दूधर्म में कहीं घर्षण नहीं रह पाया। यूरोप में विज्ञान के आविष्कारों का चर्च के साथ संघर्ष हुआ। विज्ञान सृष्टिविषयक नयी-नयी बातें खोजकर समाज के सामने उपस्थित करने लगा, तब चर्च कहने लगा कि यह बाइबिल के विरुद्ध है। वैज्ञानिक कहते कि सृष्टि करोड़ों वर्ष पुरानी है, तो चर्च कहता कि वह छह हजार वर्ष पुरानी है। इस विरोध चल रहा था। गैलिलियो कहता था कि पृथ्वी घूमती है और धर्मशास्त्री कहते थे कि नहीं घूमती, वह स्थिर है। इस प्रकार हो गया विज्ञान और धर्मशास्त्र के बीच संघर्ष शुरू। गैलिलियो को खूब सहना पड़ा। वैज्ञानिकों पर ऐसे अत्याचार भारत में भी हो सकते थे। परंतु नहीं हुए। इसका श्रेय शंकराचार्य को है। उन्होंने लिखा - **न हि श्रुतिशतमपि अग्निरनुष्ण इति ब्रुवन प्रामाण्यमुपैति।** यदि सौ-सौ वेद आकर कहें कि अग्नि उष्ण नहीं होती, तो उसे कोई नहीं मानेगा, क्योंकि यह विज्ञान का, प्रत्यक्ष का विषय है। इससे श्रुतिविरोध-धर्मविरोध हो ही नहीं सकता। यह शंकराचार्य का प्रताप है। इसी लिए यहां विचार--स्वातंत्र्य और बुद्धि-स्वातंत्र्य रह सका।

विचार-निष्ठा

शंकराचार्य कहते थे मेरे सामने कोई भी आये, मैं उसे विचार ही सुनाऊंगा और उससे भी विचार ही सुनूंगा। ऐसी प्रतिज्ञा करके उन्होंने 32 वर्ष की अल्पायु में ही भारत के विच्छिन्न हुए विचार को संवारा और हिंदूधर्म को मजबूत वैचारिक बैठक दी। उनकी प्रतिज्ञा ही थी कि मेरे पास विचार के सिवा कोई भी शक्ति नहीं। वे कहते थे कि “किसी के न समझने तक मैं समझाता ही रहूंगा, चाहे उसके लिए मुझे कितनी ही बार समझाना पड़े। दुबारा समझाऊंगा, तिबारा समझाऊंगा।” ज्ञानशक्ति और विचारशक्ति पर ऐसा अटल विश्वास ही सत्याग्रह है। हिंदूधर्म के प्रचार का काम शंकराचार्य से बढ़कर शायद किसी ने नहीं किया। उसके लिए सारे हिंदुस्तान में वे कई दफा घूमे। उन्होंने लिखा है, “धर्मतत्व के प्रचार का एकमात्र साधन बुद्धि है। अगर कोई नहीं समझता है तो बुद्धि से उसको समझाना है। फिर भी कोई नहीं समझता है, तो फिर से समझाना है। बुद्धि के सिवा विचार-प्रचार का दूसरा कोई शस्त्र नहीं है। क्योंकि अज्ञान को ज्ञान ही मिटा सकता है।” धर्म का प्रचार करनेवाले शंकराचार्य ने बुद्धि से ही समझाने की बात कही है। धर्म-प्रचार का दूसरा हथियार ही नहीं है। हिंदूधर्म में एक महान विचार मनुष्य के पुनर्जन्म का है। इस जन्म में मनुष्य जो कर्म करता है उसे अगर वह पूरा नहीं पाता तो दूसरे जन्म में उसे पूरा करने की कोशिश करता है। इस तरह मनुष्य का निरंतर विकास होता रहता है। पुनर्जन्म का विचार तो बुद्धि से ही समझाने का विचार है। मुझे ऐसे कई हिंदू मिले हैं जो पुनर्जन्म को नहीं मानते। कई ऐसे मुसलमान और ईसाई भी मिले हैं जो कहते हैं कि इस विचार में सार है। धर्म आत्मा का विषय है जिसका प्रचार चिंतन से, ज्ञान से, तपस्या से, अनुभव से ही होता है। गांधीजी ने हमारे लिए एक उदाहरण दिया है। प्रार्थना के समय उन्हें रक्षण देने की बात निकली तो उन्होंने कहा कि उस समय तो मैं भगवान के हाथ में रहूंगा। उस समय किसी दूसरे के रक्षण की बात मैं सहन नहीं करूंगा। क्योंकि प्रार्थना अगर रक्षण के अंदर होती है तो वह प्रार्थना ही मिट जाती है। हम रक्षण को लेते हैं तो भगवान को छोड़ देते हैं। इसलिए हिंदूधर्मवाले और सब धर्मवाले, धर्म को सत्ता से जोड़ने की बात छोड़ दें। दोनों को जोड़ने जाते हैं तो धर्म की हानि करते हैं।